अध्याय– द्वितीय

सम्बन्धित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

2.2 शोध साहित्य के अवलोकन का महत्व

2.3 पूर्व में हुए शोध कार्य

2.3.1 भारत में किये गये शोध कार्य

2.3.2 एम.एड स्तर पर हुए शोध कार्य

अध्याय– द्वितीय

सम्बन्धित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना :–

किसी भी क्षेत्र के अनुसन्धान की प्रक्रिया में साहित्य का पुनरावलोकन एक महत्वपूर्ण कदम है। शोधकार्य के अंतर्गत साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक एवं अनिवार्य प्रक्रिया है। वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान को आगे बढाया जा सकता है।

सम्बन्धित साहित्य का तात्पर्य है, अनुसन्धान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोशों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधो एवं अभिलेखों आदि से है। जिनके अध्ययन से अनुसन्धानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं, शोध प्रश्नों के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढाने में सहायता मिलती है। इसके अभाव में उचित दिशा में अनुसंधान को नहीं बढाया जा सकता है। जब तक उसे ज्ञान न हो कि, उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है? किस विधि से कार्य किया गया है। तथा उसके निष्कर्ष क्या आए है? तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न तो इस दिशा में सफल हो सकता है।

गुडबार तथा स्केट्स कहते है– 'एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि, वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधिसंबंधी आधुनिक खोजो से परिचित होता रहे, उस प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र तथा अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करनेवाले अनुसन्धानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र में सम्बन्धित सूचनाओं से परिचित होना आवश्यक है।

2.2 शोध साहित्य के अवलोकन का महत्व :-

1. ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिए आवश्यक है कि, अनुसन्धानकर्ता को यह ज्ञात हो कि, ज्ञान की वर्तमान सीमा कहॉ पर है। वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान को आगे बढाया जा सकता है।
2. पूर्व साहित्य के अवलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसन्धान के विधान की रचना के सम्बन्ध में अर्न्तदृष्टि प्राप्त हो सके।
3. पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य सम्बन्धित नवीन समस्याओं का पता लगता है।
4. सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसन्धानों को नवीन दशाओं में लाने की आवश्यकता होती है।
5. किसी अन्य अनुसन्धानकर्ता द्वारा यदि वह अनुसन्धान कार्य भली प्रकार किया गया हो तो, हमारा प्रयास निरर्थक साबित होगा।

अतः उपर्युक्त कारणों को देखने से यह ज्ञात होता है कि, साहित्य के अवलोकन का अनुसंधान में बडा महत्व है।

2.3 पूर्व में हुए शोध कार्य :-

प्रस्तुत समस्या से सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन इस प्रकार है। विचारों की अभिव्यक्ति में भाषा की भूमिका का परीक्षण पियाजे (1952) तथा ल्यूरिया (1961) ने किया था। परंतु सम्बन्ध को पूर्णतः प्रकाश में नहीं लाया गया था। डेबुन (1963) के अनुसार, जो भी सूना और बोला जाता है, वह पठन व लेखन को प्रभावित करता है, इस बात का अध्ययन किया गया। कई लेखकों ने श्रवण भाषा विकास को निम्न श्रेणियों में बाटा है।

अ) आंतरिक भाषा।

ब) ग्रहण की गयी भाषा।

क) भाषा को व्यक्त करना।

यह श्रेणीबद्ध व्यवस्था भाषा की कमियों को दूर करने में उपयोगी सिद्ध हुई। इसका अध्ययन मैककार्थ (1964), शैकेल बुच (1957), बुड (1964) एवं मायकल वस्ट (1965) द्वारा किया गया है। स्प्रेलिन (1967) ने सुझाव दिया की, कुछ बच्चे दो प्रकार की ध्वनियों में अन्तर नहीं कर पाते है और कुछ बच्चे एक ही वाक्य के विभिन्न अर्थों को अलग–अलग नहीं कर पाते है।

पठन सम्बन्धि शोधकार्य में बहुत से विद्यार्थियों को मुख्य रूप से भाषा पढ़ने में कठिनाई होती है, जो उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करती है। किर्क क्लिबेन लर्नर (1978) के अनुसार, पढ़ने से बौद्धिक और राजनैतिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। बच्चों में पढ़ने से ज्ञान का विकास होता है। जो कि, उनकी सफलता के लिए आवश्यक हैं। उपाध्याय ने (1970) मराठी और मलयालम् की ध्वनियों की तुलना की।

2.3.1 भारत में किये गये शोध कार्य :–

1) गुप्ता (1998) :–

कक्षा 2 के विद्यार्थियों की भाषा और गणित में अधिगम कठिनाईयों की प्रकृति का अध्ययन किया।

<u>निष्कर्ष :–</u> (1) पढ़ने और लिखने में बच्चे बहुत गलतियॉ करते है। (2) मौखिक रूप से पठन प्रक्रिया में बच्चे बहुत कमजोर पाए गए। (3) बहुत से बच्चे गद्यांश के प्रथम वाक्य को भी नहीं पढ़ सके। (4) बहुत से बच्चे शब्दों तथा वाक्यों की पहचान में भी बहुत–सी त्रुटियॉ करते हैं (5) पढने के कौशलं की तुलना में सुनने का कौशलं बच्चों में अधिक था। (6) बच्चों की कक्षा मे कम उपस्थिति, अभिभावकों का कम शिक्षित होना तथा गरीब होना भी अधिगम कठिनाई के प्रमुख कारण है।

2) कुमार नन्दा बी (1992) :–

मद्रास के केन्द्रीय विद्यालय में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को हिन्दी लेखन में आनेवाली त्रुटियों का निदानात्मक अध्ययन किया।

<u>उद्देश्य</u> :–

1. केन्द्रीय विद्यालय के कक्षा–10 के विद्यार्थियों के लेखन में आनेवाली त्रुटियों का अध्ययन करना।
2. त्रुटियों को व्याकरण की वृद्धि से विभिन्न कौशलों में विभक्त करना।
3. त्रुटियों को स्त्रोतों एवं कारणों का अध्ययन करना।
4. सभी त्रुटियों को उनकी महत्ता के आधार पर विभक्त करना और उन त्रुटियों से सम्बन्धित अनुपात का अध्ययन।

<u>निष्कर्ष</u> :– कुछ न्यादर्श से 75 प्रतिशत त्रुटियों मे छह प्रकार की व्याकरणीय क्षेत्र में त्रुटियॉ की जो इस प्रकार है।

पद संख्या – 79.05%

वाक्यांश – 54.07%

विश्लेषण एवं संश्लेषण – 80.86 %

विरामचिह्न – 88.07%

एक शब्द – 81.69%

शब्द मिलाना – 77.65%

विद्यार्थियों ने हिन्दी भाषा उपलब्धि, बुद्धि तथा सामाजिक, आर्थिक स्थिति के आधार पर नकारात्मक सहसम्बन्ध की प्रतिशत में त्रुटियॉ की है।

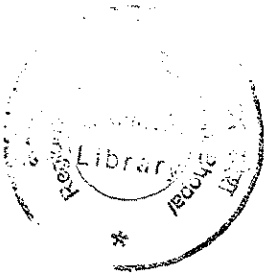

2.3.2 एम.एड स्तर पर हुए शोधकार्य :-

Library

(1) इन्द्रपुरकर (1968) :—

'चंद्रपुर के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की भाषा सम्बन्धी गलतियों का अध्ययन किया।'

निष्कर्ष :—

1. छात्र के द्वारा शब्दों को बोलने में बार—बार गलतियाँ होती है।
2. मौखिक परीक्षण द्वारा यह पाया कि, शब्दों के उच्चारण में भी बार—बार त्रुटियाँ होती हैं।
3. लिखित परीक्षण में पाया कि, बच्चे सुनकर सही शब्द नहीं लिख पाते।

(2) अग्निहोत्री आर. (1978) :—

'छोटे बच्चों में भाषा विकास' इस विषय पर पी.एच.डी. अध्ययन किया।'

निष्कर्ष :—

1. भाषा विकास स्थिति पर सामाजिक, आर्थिक स्तर का प्रभाव होता है।
2. भाषा विकास पर लिंग और जन्मजाती का भी प्रभाव होता है।

इस सन्दर्भ में सिंगलर (1986) का मत ही उचित लगता हैं कि, बच्चों की शिक्षा तथा योग्यता विकास पर माता—पिता के सामाजिक स्तर का प्रभाव उतना नहीं पडता, जितना उनकी जीवन शैली और दैनंदिन भाषा प्रयोग और सहायता का पडता है।

(3) नसीम एच.सी. (1978) :— ने 'हरियाणा राज्य में कक्षा 5 के बच्चों की आधारभूत व्याकरण की जानकारी हेतु जॉच—पडताल का अध्ययन किया।'

उद्देश्य :–

1. दस वर्ष तक के विद्यार्थियों की समझ में आनेवाले शब्दों की सूची तैयार करना।

2. पाठ्यपुस्तकों के लेखकों को बच्चों के उच्च, निम्न स्तर को ध्यान में रखते हुए श्रेणीबद्ध पुस्तकें तैयार करने के लिए सक्षम करना।
3. भाषायी ज्ञान में पिछडे हुए विद्यार्थियों के लिए शिक्षकों को उपचारात्मक परीक्षण तैयार करने के लिए सक्षम करना।

निष्कर्ष :–

1. कक्षा पांच में प्रयुक्त होनेवाले कई शब्द ऐसे थे, जिनका कठिनाई स्तर शून्य था, और कई ऐसे थे, जिनका 99 प्रतिशत।

2. 20 प्रतिशत से कम कठिनाई स्तर के शब्द 70 से कम था।
3. 20 प्रतिशत से 69 प्रतिशत तक के कठिनाई स्तर वाले 1525 शब्द पाए गये।
4. 1525 ऐसे शब्दों को बताया गया, जो कि 10 वर्ष तक के विद्यार्थियों को पता होना चाहिए।

(4) बिरकर के. आर. (1989) :– ने 'मराठी और भाषायी सृजनात्मकता व भाषायी क्षमता के बीच सम्बन्धों का अध्ययन किया।'

उद्देश्य :–

1. लड़कों एवं लड़कियों की भाषायी सृजनात्मकता व भाषायी क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. लड़को एवं लड़कियों की वाक्यरचना, भावात्मक तीव्रता, संवाद लेखन, कहानी लेखन तथा कहानी पूर्ण करना, कविता रचना, तथा कल्पनापूर्ण क्षमताओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. लड़कियों की तुलना में लड़कों में भाषायी क्षमता और शाब्दिक सृजनात्मकता अधिक है।

2. वाक्यों की रचना प्रकार, भावात्मक तीव्रता, संवाद लेखन, कहानी लेखन तथा कहानी पूर्ण करना, यहॉ तक की कविता रचना तथा कल्पनापूर्ण क्षमता में लड़को व लड़कियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

(5) फडके आशा (1988–89) :– ने अपने लघुशोध निबंध में, 'मराठी माध्यम के कक्षा 5वीं से 7वीं तक के विद्यार्थियों को मराठी विषय के अध्ययन में आनेवाली समस्या का अध्ययन किया।' उन्होंने सर्वेक्षण विधि द्वारा अध्ययन किया।

निष्कर्ष:–

1. छात्रों के उच्चारण, लेखन एवं बोली भाषा पर उनके वातावरण का प्रभाव होता है।

2. छात्रों को उच्चारण के बारे में सही आकलन नहीं होता है।
3. छात्रों के अवांतर पठन एवं पाठ्यपुस्तक पठन में कमियॉ रहती है। इस निष्कर्ष के कुछ सुझाव निम्नलिखित है।

सुझाव :–

1. शिक्षकों ने शैक्षिक सामग्री का जादा से जादा उपयोग किया तो व्याकरण विषय में होनेवाली कठिनाईयॉ कम हो सकती है।

2. छात्र कक्षा में पठन मे जादा ध्यान नहीं देते लेकिन कुछ बडे उदाहरण पठन करने के लिए दिये जाने चाहिए।
3. छात्रों को दैनंदिन परीचय की उदाहरणों का उपयोग करके अध्ययन में योग्यता लानी चाहिएं।

(6) गद्रे अनुराधा (1991–92) :– ने एम.एड में लघु शोध निबंध पुणे विश्वविद्यालय पुणे में सादर किया। उनका विषय था– 'मराठी व्याकरण इस घटक में अध्यापन विधि की परीणामकता' उद्‌गामी व अवगामी तथा प्रचलित अध्यापन विधि इस विषय पर अध्ययन किया।

<u>उद्‌देश्य</u> :–

1. छात्रों का व्याकरण घटक में अध्ययन कर दुर्लक्ष दूर करना।
2. व्याकरण अध्ययन में छात्रों की रूचि बढाना, इसलिए अध्यापन विधि द्वारा अध्यापन करना।
3. छात्रों में उद्‌गामी विधि से अध्ययन रूचि का विकास करना।
4. उद्‌गामी विधि द्वारा छात्रों को इतर विषय में आनेवाली समस्या को दिशा देना।

<u>निष्कर्ष</u> :–प्रायोगिक समूहों से नियंत्रित समूह का मध्यमान जादा है। उद्‌गामी व अवगामी अध्यापन विधि भाषा व्याकरण अध्यापन में प्रभावशाली सिद्ध हुई।

(7) व्ही.म्हस्के (1998–2000) :– ने एम.एड. में लघुशोध निबंध पुणे विश्वविद्यालय पुणे में सादर किया, उनका विषय था– 'कक्षा 8 के छात्रों को मराठी भाषा व्याकरण में आनेवाली समस्या की पहचान करना एवं उपाय' इस विषय पर अध्ययन किया।

<u>उद्‌देश्य</u> :–

1. छात्रों का व्याकरण अध्ययन में दुर्लक्ष दूर करना।
2. व्याकरण अध्ययन में छात्रों की रूचि बढाना।
3. पाठ्यपुस्तक सम्बन्धि छात्रों को अनुभव और रूचि के उदाहरण देकर व्याकरण लेखन का सुझाव देना।

4. व्याकरण लेखन में छात्रों की कठिनाई दूर करना और उनका आत्मविश्वास बढाना।

5. व्याकरण सम्बन्धि रूचि निर्माण करना।

उन्होंने निष्कर्ष में यह पाया कि, छात्रों को उनकी रूचिरूप उदाहरण देने से उनका व्याकरण लेखन में सुधार पाया गया। व्याकरण में सूक्ष्म बातों को विद्यार्थी ध्यान में रखते है। इसलिए व्याकरण लेखन प्रभावकारी होता है, दुर्लक्षित छात्रों के सम्बन्ध में अनुसन्धान प्रकल्प करने के बाद भी उनकी प्रगति प्रभावकारी नहीं दिखाई गयी।

(8) वाजपेयी भावना (1990) :– 'माध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं के हिन्दी उच्चारण दोष का समीक्षात्मक अध्ययन।'

निष्कर्ष :–

1. छात्र–छात्राओं की मात्रासम्बन्धी त्रुटियों में सार्थक अंतर है।
2. शब्द की गलतियॉ, मन से पढ़े शब्द, शब्दों को छोड दिया आदि के बीच छात्र–छात्राओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
3. भिन्न भिन्न भाषा–भाषियों के कारण, स्पष्ट भाषा ज्ञान न होने के कारण उनमें उच्चारण में दोष पाया गया है।

(9) नूरजहॉ मलिक (1979) :–

'प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं में हिन्दी विषय की चयनित दक्षताओं का तुलनात्मक अध्ययन।'

निष्कर्ष :–

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों की बालिकाओं में शब्दों और वाक्यों को देखकर लिखने में ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों की बालिकाओं में क्षमता अधिक है।

2. अक्षरों एवं शब्दों को सही आकार व क्रम तथा उनके बीच की दूरी में अंतर की दक्षता, ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों की बालिकाओं में अधिक है।

3. चयनित दक्षता में, 80 प्रतिशत दक्षता उपलब्धि में सें शहरी बालिकाओं नें 40 प्रतिशत व ग्रामीण बालिकाओं ने 30 प्रतिशत हासिल कर ली है। इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की अपेक्षा शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की दक्षता उपलब्धि बेहतर हैं।

(10) श्रीवास्तव मिनी (1999) :–

'प्राथमिक शिक्षा के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा उपलब्धि एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अध्ययन।'

<u>उद्देश्य</u> :–

1. कक्षा 5 में अध्ययनस्त विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा की दक्षताओं का परीक्षण करना।

2. प्राथमिक शिक्षक–शिक्षिकाओं से साक्षात्कार करना।

3. विद्यालय के अवलोकन के आधार पर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की वास्तविक स्थिति को ज्ञात करना।

4. प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा उपलब्धि एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सम्बन्ध स्थापित करना।

5. कक्षा 5 में अध्ययनरत विद्यार्थियों को हिन्दी शिक्षण तथा भाषा की उन्नति हेतु सुझाव देना।

निष्कर्ष :–

1. 77 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बोलने में दक्षता हासिल कर ली है।
2. 32 प्रतिशत विद्यार्थियों में स्पष्ट एवं शुद्ध उच्चारण की कमियॉ पाई गई।
3. अवलोकन पर यह भी देखा गया कि, शिक्षक स्वयं उसी भाषा का प्रयोग करते है।

(11) सालुंके अमित (2006–07) :–

'कक्षा नववीं के मराठी भाषा पाठ्यपुस्तक का समीक्षात्मक अध्ययन।'

निष्कर्ष :–

1. पाठ्यपुस्तक के अंतरंग में मुख्यपृष्ठ, मलपृष्ठ व सम्बन्धित विषय घटक में चित्र का वापर अच्छा हुआ।
2. बहिरंग में उद्देश्य से पाठ्यपुस्तक तैयार किया था।
3. पाठयांश का ढांचा विषयानुरूप अच्छा था।
4. मराठी विषय पाठ्यघटक में गाभाभूत घटक का वापर आशयानुकूल था।

पूर्व शोधों के विस्तृत अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि, मराठी भाषा व्याकरण के संदर्भ में अनेक शोध किये गए, निष्कर्ष भी निकाले गये। लेकिन लेखन कौंशलं में विद्यार्थियों द्वारा किये गये लेखन की अशुद्धियों पर अध्ययन करने हेतु और विद्यार्थी लेखन की दक्षता को कहॉ तक समझे है, ये जानने के लिए कक्षा छठवीं के मराठी भाषी विद्यार्थियों के मराठी भाषा लेखन अशुद्धियों का अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस हुई, इसलिए अध्ययन करना है।